

अनिल कुमार
इतिहास विभाग, आरबीजीओआरकेए
महाराजगंज (सिवान)

"7वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के बीच भारतीय व्यापार उद्योग एवं निगम"
(शैव भाग)

विदेश व्यापार - दक्षिण भारत के समुद्र पार के देशों जैसे चीन, अरब एवं फारस की खाड़ी के पूर्वी तट पर स्थित सिराफ सम्पूर्ण एशिया की सबसे बड़ी व्यापारिक अंतरराष्ट्रीय मंडी थी। इन सबके साथ दक्षिण भारत से व्यापार होता था। श्री लंका के साथ दक्षिण भारत के व्यापारिक सम्पर्क पहले ही बहुत घनिष्ठ थे।

दक्षिण भारत से निर्यात किए जाने वाले माल को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। (1) मसाले, औषधियाँ और खाद्य सामग्री (2) उद्योगों के लिए कच्चे माल (3) उत्पादित वस्तुएँ। मसालों में सबसे अधिक मात्रा काली मिर्च की थी। इसके साथ सफेद मिर्च का निर्यात कवीलों के बंदरगाह से होता था। दालचीनी, लोंग, अदरक, को आयात करके भी निर्यात किया जाता था। जायफल, खोरी इलाइची, जवारी का निर्यात भी मुख्य मसालों में से थे। चावल, ज्वार, शकर, नागिनल, जैसे खाद्य सामग्री एवं अजरक, अंबर, गुग्गुलु, सोहागा, कपूर, कवाबचीनी, रिफल, कस्तुरी, अफीम और लारव जैसे औषधियों का भी निर्यात होता था।

दूसरी श्रेणी के निर्यातित वस्तुओं में औद्योगिक कच्चे माल थे जैसे रंग, कुछ विशेष प्रकार की लकड़ियाँ, चातुर्ण एवं किमती कीमती पत्थर। नील, चंदन, लकड़ी एवं सागौन की लकड़ी के माँग भी विदेशों में काफी थे। सीमित मात्रा में लोहा, कीमती पत्थर और रत्नों का भी निर्यात होता था।

उत्पादित वस्तुओं में कालीन, रेशमी और सूती कपड़े, चमड़े के सामान, इत्र, रंगे एवं छपे हुए कपड़े का निर्यात पर्याप्त मात्रा में होता था। निर्यात की तुलना में आयात होने वाले माल की मात्रा बहुत कम थी। परंतु आयात होने वाली कुछ वस्तुओं का आयात केवल निर्यात करने के लिए किया जाता था। औद्योगिक कच्चे माल में अफ्रीका से हाथी दाँत, मक्का से मूँगा, फारस की खाड़ी के देशों से कच्ची मोम, चातुर्ण में चाँदी, ताँबा, तिन, श्री लंका से विशेष प्रकार के रत्न, चीनी, पीतल के वर्तन, रेशम के धागे चीन से, किसमिस और खजूर का फारस तथा अरब से, अफीम का अफ्रीका से एवं प्योड़ों का आयात अरब देशों से होता था।

परंतु दक्षिण भारत में आयात होने वाले माल की तुलना में निर्यात बहुत अधिक होता था इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि बारहवीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण भारत से अत्यधिक आयात के कारण जब चीन की राजत मुद्रा अत्यधिक मात्रा में बाहर जाने लगी तो चीनी सरकार ने दक्षिण भारत से होने वाले आयात व्यापार पर विभिन्न प्रतिबंध लगाये। मध्यपूर्व की प्रमुख मंडियों दक्षिण से आयातित माल पर मुख्यतः आश्रित थी। दक्षिण भारत के विभिन्न बंदरगाह विदेशी जहाजों से भरे रहते थे।

व्यापारिक निगम (फिदावन्त) - दक्षिण भारत के आर्थिक जीवन की सर्वप्रमुख विशेषता सुसंगठित व्यापारिक निगम थे। ड्यूगों एवं व्यापारों में लगे व्यक्तियों ने सामूहिक रूप से स्वयं को निगमों में संगठित कर रखा था। तेल व्यापार से जुड़े तेलिक निगम, शिल्पियों एवं नगरों के व्यापारियों से जुड़े नानादेशि निगम, एवं बड़े-बड़े व्यापारिक नगरों के निगमों को नगरम् या नगर कहा जाता था। इन निगमों का कार्य सिंचाई पर ध्यान देना, व्यापारिक मार्ग में सुरक्षा के लिए वेतनभोगी सेना को लगाना, तथा व्यापार किन्ने जाने वाले माल का मूल्य निर्धारित करना होता था। इन निगमों को पर्याप्त आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त थी। जिस क्षेत्र में निगम प्रमुख निवास करते थे वहां उन्हें एकाधिकार प्राप्त था और वे काफी हद तक शक्ति में थे। वे अपने सदस्यों का सम्मिलित काफिला बनाकर अपने निगम के नायक के नेतृत्व में लम्बे व्यापारिक मार्गों में जाते थे। देश के आर्थिक जीवन में इन निगमों की बहुमुखी भूमिका थी।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस काल में दक्षिण भारत का आर्थिक जीवन विविधता एवं समृद्धि का आश्रम लिम हुआ था। बंदरगाहों एवं नगरों के विस्तार, कृषि एवं सिंचाई के विकास तथा विदेशी व्यापार में प्रगति दक्षिण भारत के आर्थिक उन्नति का प्रमुख कारक था। चोलों, पाण्ड्य राजा के पतन के उपरान्त भी दक्षिण भारत के

आर्थिक जीवन में कोई विशेष गिरावट नहीं आई और चौदहवीं
शताब्दी में विजयनगर के उत्थान से दक्षिण भारत के आर्थिक
जीवन में चहुंमुखी सुगति हुई और यह स्थिति सतरहवीं
शताब्दी के मध्य तक चलती रही।